बाल किलकारी

(बिहार बाल भवन का मासिक अखबार)

वर्ष - 2, अंक-5
मूल्य 10/-

मई-2016

चंचल मन को भा जाता, तू तो अपना साथी है,
बुद्ध के ज्ञानों से सींची, बड़ी अनोखी माटी है।

हैलो गया,

तुमसे मिलते ही ऐसा लगा, जैसे तुम्हारे अंदर तालाब, पोखर, पेड़ों, पर्वतों की भरमार है। तुम्हारी मिट्टी में कई कहानियाँ छिपी पड़ी हैं। हवाओं में अपनेपन की खुशबू आती है। एक तरफ झल्लाते सूरज दादा, एक तरफ गर्म पहाड़ तो एक तरफ सुराही का मीठा पानी। देखते ही लगा-अरे वाह ! कितना स्वच्छ शहर है ! लगा, जैसे सचमुच यहाँ कुछ तो अनोखा है। फिर मैंने देखा तुम्हारा बाल-भवन। बन रहा था, छोटा था। पर प्यार था, ठंडक थी, आजादी थी और अपनापन था। सुना है तुममें कोई नदी बहती है-फल्गू। रेत-ही-रेत है उसमें। उसके नीचे पानी बहता है । क्या तुम्हें कोई जादू आता है?अच्छा भाई, कुछ तो बताओ अपने बारे में। ''मेरे बारे में क्या जानना चाहते हो?'' ''हाँ-हाँ शर्माते क्यों हो?बताओ ना ?'' ''तो सुनो, वैसे तो मेरा इतिहास बहुत पुराना है। मेरा अस्तित्व अशोक साम्राज्य में भी था। पहले मेरा नाम उरूवेला था। पर बाद में एक दैत्य गयासुर के नाम पर मुझे एक नया नाम मिला-'गया'। छोटा-सा, परन्तु प्यारा-सा नाम। मंदिरों से तो मेरा बहुत गहरा नाता है। विष्णुपद मंदिर, महाबोधि मंदिर मेरी ही जमीं पर तो खड़े हैं। तुम्हें पता है-मेरे अंदर कई देशों के मंदिर हैं ?'' ''अच्छा... ....! कौन-कौन से हैं?'' मैंने लम्बा मुँह खोलते हुए कहा। गया ने अपनी बात जारी रखी, ''तिब्बत-मंदिर, जापान-मंदिर, भूटान-मंदिर, थाई-मंदिर, नेपाल-मंदिर, सीचीन तेनई-मंदिर, चाईना इत्यादि। मेरी इस माटी पर बुद्ध को ज्ञान मिला था। यहाँ बोधि-वृक्ष भी है। इसलिए महाबोधि मंदिर कुछ विशेष है। यहाँ कई देशों के लोग बोधि वस्त्र पहने मानो संदेश दे रहे होते हैं कि 'चमन अलग-अलग हैं, राग मगर एक है।' वैसे तुम्हें तो पता होगा मैं विश्व में पिंडदान के लिए भी मशहूर हूँ। मुझमें पितृपक्ष का मेला लगता है-बड़ा भव्य और सुन्दर ! अनरसा, लाई, तिलकुट कुछ प्रसिद्ध मिठाइयाँ हैं मेरी। पता है-भारतवर्ष की अगरबत्तियाँ पहले मुझमें ही बनती हैं। तो भाई, यही सब है मेरी कहानी।''

''क्या खूब मजेदार कहानी है तुम्हारी। वैसे पता है, मैंने भी तुम्हारा महाबोधि मंदिर देखा। बड़ा भव्य और विशाल! अचरज की बात तो यह है कि इत्ता बड़ा-सा मंदिर मेरे इत्ते-से छोटे मन में कैसे समा गया। तुम सचमुच अनोखे हो..... बेहद ही खास ! और एक अच्छे मित्र भी, जो आनेवालों का दिल खोलकर स्वागत करता है। बड़े मजे से रखा तुमने। तुमने कई सारी मस्तियाँ, शरारतें और मीठी यादें दीं। मस्ती के कुछ सुनहरे लम्हें भी दिए। जिस तरह आया था तुम्हें 'हैलो' कहकर उसी तरह तुम्हें धन्यवाद.... गया। फिर मुलाकात होगी। कुछ मीठी बातें होंगी। पर हाँ, भूलना मत इस नन्हें साथी को।''

किलकारी लाल

प्रेरक प्रसंग

मन के हारे हार है

राजकुमार सिद्धार्थ जो आगे चलकर 'बुद्ध' हुए, गृह त्यागकर निकले तो बोध की खोज में काफी भटके । आखिर उनकी हिम्मत टूटने लगी। उनके मन में यह विचार बार-बार उठने लगा कि क्यों न वापस राजमहल चला जाये और अंत में एक दिन वे कपिलवस्तु की ओर लौट ही पड़े। चलते-चलते राह में उन्हें प्यास लगी । सामने ही एक झील थी। वे उसके किनारे गये, तभी उनकी दृष्टि एक गिलहरी पर पड़ी। गिलहरी कोई दुर्लभ जीव नहीं, किन्तु उस गिलहरी की चेष्टाओं ने सिद्धार्थ का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया। बात यह थी कि वह गिलहरी बार-बार पानी के पास जाती, अपनी पूँछ उसमें डुबाती और उसे निकालकर रेत पर झटक देती।

सिद्धार्थ से न रहा गया। वे पूछ ही बैठे, ''नन्हीं गिलहरी, यह क्या कर रही हो तुम ?'' ''इस झील को सूखा रही हूँ ।'' उसने उत्तर दिया।

''यह काम तो तुमसे कभी न हो पाएगा ।'' भले ही तुम हजार बरस जियो और करोड़ों-अरबों बार अपनी पूँछें पानी में डुबाकर झटको; किन्तु झील को सुखाना तुम्हारे वश की बात नहीं।''

''तुम्हीं ऐसा मानो, मैं नहीं मानती।'' मैं तो यह जानती हूँ कि मन में जिस कार्य को करने का निश्चय किया, उस पर अटल रहने से वह हो ही जाता है। मैं तो अपना काम करती रहूँगी।'' और वह अपनी पूँछ डुबोने झील की ओर चल पड़ी।

गिलहरी की बात सिद्धार्थ के हृदय में पड़ गयी। उन्हें अपने मन की निर्बलता महसूस हुई। वे वापस लौटे और फिर तप में निरत हो गए।

प्रस्तुति-सरिता रानी

गया धाम

भगवान बुद्ध को ज्ञान मिला,
पावन माटी थी उरूवेला ।
लाखों हिन्दू पिंडदान करते,
पितृपक्ष का लगता मेला ।
बना दिया एक रास्ता,
तोड़कर उस पहाड़ को ।
नाम था दशरथ माँझी,
दिया मिसाल संसार को ।
दुनिया में इसका नाम,
कौन नहीं है जानता।
गया की खूबियों को,
कौन नहीं पहचानता।
यहाँ का हर स्थल,
देखने में है आकर्षक।
देश-विदेश से श्रद्धालु,
आते हैं करने दर्शन।
यहाँ के लोगों में एकता,
आपस में प्यार जरूर है।
तिलकुट, अनरसा के लिए,
गया शहर मशहूर है।
बोधि वृक्ष प्रतीक चिह्न,
हमारे राज्य बिहार का।
जिसकी महिमा सब कोई जाने,
हर कोना संसार का।
लोगों के प्रेम-आस्था से,
बना यह तीर्थस्थान।
इसी हेतु गया धाम की,
बन गयी खूब पहचान।

सम्राट समीर, वर्ग-नवम

माथापच्ची

अठन्नी-चवन्नी नौ तो जोड़ा रूपये कितने?

बुद्ध ने पाया ज्ञान

हमारे जीवन में,
होता है कुछ नया।
धर्म और संस्कार से,
भरा हमारा गया।
फल्गू नदी है यहाँ,
जिसे अंत: सलिला कहते ।
अंदर-ही-अंदर इसके,
जल-धारा है बहती।
बैठ बोधि-वृक्ष के नीचे,
बुद्ध ने पाया ज्ञान।
बनाया एक धर्म नया,
एक नयी पहचान ।

तृप्ति, कक्षा-नवम्

बड़ा अभिशाप

मोक्ष-प्राप्ति का यह स्थान,
है यह गया महान ।
यहीं, बुद्ध को हुआ प्राप्त ज्ञान,
कहते हैं मोक्ष नगरी इसे,
यही है गयासुर का वास स्थान
हाँ, है मेरा गया महान
छोड़ा अयोध्या राम ने,
दु:ख की घड़ी घिर आयी थी।
रामशिला पड़ा उसका नाम,
जहाँ उन्होंने शरण पायी थी।
पता चला जब माता सीता को,
दशरथ जी गये स्वर्ग सिधार।
राम, लक्ष्मण न थे घर पर,
अकेले ही सीता माता ने
पिंडदान का बीड़ा उठाया था।
पिंडदान कर पहुँची माता,
राम ने माँगा इस बात का गवाह
सीता माता झट से बोलीं–
फल्गू, तुलसी, गौ, पंडित पीपल ।
चारों ने दिया नकार,
पीपल ने किया साकार,
सीता माता ने क्रोध में आकर,
दिया चारों को बड़ा अभिशाप।
फल्गू सूखी, तुलसी नदी-नालों में उगी,
पंडित बना दरिद्र, गौ की पूजा तो हुई
पर मानी गई मुख से अशुद्ध ।
पीपल को मिला वरदान,
युग-युग तक अभी भी है टिकान ।

रिंकी कुमारी,

कहानी

फ़ख़

तालाब के किनारे एक झोंपड़ी में एक बूढ़ा व्यक्ति अपने बेटे के साथ रहता था। बूढ़ा बेचारा बहुत गरीब था। लेकिन वह सोच रहा था कि मैंने अनपढ़ रहकर किसी तरह तो अपना जीवन काट लिया और अगर मेरा बेटा अनपढ़ रह गया तो आजकल की दुनिया में उसका गुजर नहीं हो सकेगा। यह उसकी सोच थी । इसके बेटे का नाम था दीप। पिता दिन भर जंगल में लकड़ी काटकर उसे बाजार में बेच आता। इससे कुछ आमदनी हो जाती।

उसका बेटा धीरे-धीरे बड़ा हो गया। तब उसके पिता ने कहा, ''दीप, मैं चाहता हूँ कि तुम पढ़-लिखकर कुछ बनो। मैं तो अनपढ़ रह गया, लेकिन तुझे अनपढ़ नहीं रखना चाहता। तुम पैसों के लिए चिन्ता मत करना। मैं किसी तरह मजदूरी करके तुझे पढ़ाऊँगा।'' ''बाबा, आज मैं बहुत खुश हूँ कि मैं भी सभी बच्चों की तरह ही स्कूल में पढ़ने जाऊँगा ।'' दीप ने कहा।

उसके बाबा ने दीप को स्कूल में ले जाकर नामांकन करवा दिया। कुछ दिनों के बाद दीप अगले वर्ग में चला गया। उसने टीचर को अपने बारे में सारी बातें बताईं। सारी बातें सुनने के बाद टीचर दीप की पीठ पर हाथ फेरते हुए बोले, ''दीप, तुम कुछ ऐसा करो कि तुम्हारे बाबा को खुशी मिले।'' टीचर ने कहा।

पुस्तक का पहला पाठ है–एक-दूसरे की मदद करना। हमेशा दूसरों की मदद करनी चाहिए । किसी को दु:ख नहीं पहुँचाना चाहिए, दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझकर उस दु:ख को दूर करना चाहिए।'' शिक्षक यह सब बताते रहे ।

पढ़ाई खत्म होते ही सभी बच्चे घर की ओर लौट चले। दीप भी सभी बच्चों के साथ चला जा रहा था । अचानक उसे बाबा और टीचर की बात याद आई। दीप की नजर एक अंधे व्यक्ति पर पड़ी। अंधा बस यही कह रहा था, ''मेरी प्यास बुझाकर मुझे अपने घर तक पहुँचा दो। भगवान उसका भला करेंगे।'' किसी ने भी अंधे की बात पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन दीप दौड़कर उसके पास गया और उसे अपनी बोतल का पानी पिलाकर उसका सहारा बनते हुए उसे अपने घर तक छोड़ दिया। उसके बाबा भी उसी रास्ते से गुजर रहे थे। बाबा ने यह सब देखकर लपकते हुए दीप को अपने गले से लगा लिया।

काजल कुमारी, वर्ग-अष्टम

खेल

आवाज सुनो

आओ एक नया खेल खेलते हैं । खेल का नाम है 'आवाज सुनो' इस खेल में जितने चाहें, उतने बच्चे खेल-खेल सकते हैं । खेल शुरू करने से पहले उपलब्ध संसाधन इक्कठा कर लें । जैसे–टीन-थाली, घड़ा, प्लेट, डंडा इत्यादि । अब बच्चे को दो समूह में बँटेंगे । खेल शुरू होता है । पहली समूह के किसी एक बच्चों को आँखों पर पट्टी बाँध दें । दूसरे टीम का एक बच्चे किसी वस्तु की ध्वनि निकालेगा । पट्टी बाँधे बच्चा को ध्वनि पकड़ना है कि क्या बजाया जा रहा है । इसी तरह एक-दूसरी टीम के बच्चों से बारी-बारी पट्टी बाँध कर ध्वनि पहचान करते हैं । इस खेल में सभी की भागीदारी होनी चाहिए । है न मजेदार खेल! चलो खेलते हैं ।

- सुधीर

खोजबीन

प्यारे दोस्तो,

क्या आप जानते हैं माता सीता के चार श्राप एवं एक वरदान किन्हें और क्यों दिए गए ?

आइए जानते हैं गया की लोक कथाओं के अनुसार राम, लक्ष्मण और सीता अपने पिता दशरथ का पिंडदान करने गया में फल्गू नदी तट पर गए थे। राम और लक्ष्मण पिंडदान हेतु सामग्री लाने चले गए। तभी पिंड को स्वीकारने हेतु फल्गू से हाथ निकल आए। तो जल्दी में

माता सीता ने ही फल्गू नदी, गाय, ब्राह्मण, तुलसी और पीपल को साक्षी मानते हुए अपने ससुर का पिंडदान कर दिया। जब राम वापस लौटे तो सीता ने अपनी कथा कही। परन्तु राम को इस पर विश्वास नहीं हुआ और उन्होंने इनका सबूत माँगा। सबूत स्वरूप माता सीता ने गाय, फल्गू नदी, ब्राह्मण, तुलसी और पीपल को बताया, परन्तु इनमें से चार में सीता का पक्ष न लेते हुए लोभवश कहा कि 'नहीं, इन्होंने पिंडदान नहीं किया है।' जिससे क्रोधित होकर सीता ने पहले तुलसी को कहा, ''तुम अच्छी जगह पर तो उगोगी ही गन्दी जगहों पर भी जन्मोगी।'' ब्राह्मण से कहा, तुम्हें जितना भी मिल जाए और पाने के लिए तुम्हारे मन में लोभ हमेशा रहेगा। इसके बाद गाय से कहा, ''तुम मुख से अशुद्ध मानी जाओगी । कूड़े-कचरे सब खाओगी।'' फिर फल्गू को कहा कि 'तुम्हारा जल ऊपर नहीं बहेगा । तुम अंदर-ही-अंदर बहोगी।' बस पीपल ने माता की बातों का समर्थन किया। माता ने वरदान दिया कि 'तुम हमेशा ऐसे ही मुस्कुराते और हरे-भरे रहोगे।'

रानी कुमारी
वर्ग-बारहवाँ

हाइकु

- बोधि के नीचे
  भगवान बुद्ध को
  है मिला ज्ञान
- तिलकुट है
  मशहूर मिठाई
  गया की भाई
- काट पहाड़
  किया रास्ता निर्माण
  माँझी महान
- पिंडदान से
  है होता प्राप्त स्वर्ग
  मृत व्यक्ति को
- गया प्रसिद्ध
  है पिंडदान से भी
  और ऐसे भी
- बोध गया तो
  दार्शनिक स्थल है
  घूमते लोग

प्रवीण कुमार
वर्ग-षष्ठ

शान है पक्की

मेरा गया महान
तुम लोग जरा जान
सीता ने किया पिण्ड दान
पीपल को मिला वरदान
भगवान विष्णु ने ली गयासुर की जान
बच गए गया के शान-सम्मान
दुनिया भर से आते करने पिण्ड दान
मेरा गया महान ।
है यह कथा सच्ची
गया की शान है पक्की
भगवान बुद्ध ने शिक्षा प्राप्त की
दीक्षा लेने आते लोग बौद्ध धर्म की ।

दीप्ति मेहता

बूझो-बुझौवल

1. हम दोनों हैं पक्के मित्र,
   कर सकते हैं काम विचित्र।
   पाँच-पाँच हैं नौकर पास,
   नहीं छोड़ते अपना साथ।
2. चर गोड़वा पूछे, एक गोड़वा से,
   दू गोड़वा कहाँ गेलौ,
   आठ गोड़ मार के, आग लावे गेलौ।
3. फूल है, पर सुगंध नहीं
   खाते हैं, पर सजाते नहीं।
4. मेरा अपना कोई न रूप,
   औरों के चुराता रूप ।
   फिर भी मुझे सभी अपनाते,
   देख-देख कर इतराते।
5. काली गाय, कलिंगर बाछी
   टूट गया सिकड़,
   कहाँ गया बाछी।
6. पत्थर पर पत्थर,
   पत्थर पर पैसा,
   बिना पानी के घर बनाये,
   यह कारीगर कैसा ?
7. जरी गो पोखरी,
   उसमें राजा तूत।
   पहले जनमल भतिया,
   तब लागल फूल ।
8. पानी का संग निभाए,
   उम्र बढ़े छोटा हो जाए।
9. आम डोले, महुआ डोले,
   खड़ा पीपल कभी न डोले।

संग्रहण : शुभांगी कुमारी
वर्ग-नवम्

तिलकुट की खुशबू

जिसकी खुशबू फैली दूर-दूर,

गया का तिलकुट बड़ी मशहूर।
जो भी कोई यहाँ आता है,
उसका मन लुभा जाता है।
जो तिलकुट खाये,
उसका मन ललच जाए ।
सबके मन में डेरा डाला,
तिलकुट है यह बड़ा निराला
तिलकुट का स्वाद बताओ,
खाने का भी मन बहकाओ ।

चिन्ता कुमारी
वर्ग-अष्टम्

लघु कथा

प्यास

''बहन क्या तुम्हें कहीं पानी की बूँदें मिलीं?'' पहली गौरैया ने नदी तट पर बैठते हुए पूछा । ''नहीं बहन, प्यास से तो मेरी जान निकली जा रही है, पर पानी की एक बूँद भी मयस्सर है।'' दूसरी फल्गू को निहारते हुए बोली।

फल्गू इन दोनों की बातें चुपचाप सुन रही थी। फिर अपने आपको धिक्कारते हुए मन-ही-मन सोचने लगी-'अगर मैं लोभ न करती और सीता माता के पूछने पर कि 'उन्होंने अपने ससुर का पिण्डदान किया है' कह देती तो आज मेरी स्थिति यह न होती। पर अब मैं क्या करूँ?मैं भी ऊपरी सतह पर बहना चाहती हूँ ताकि मेरे जल से ये तृप्त हो सकें। मेरे साफ और स्वच्छ जल का बहाव सबकी प्यास को बुझा पाती। मैं कैसे कहूँ कि अंदर नहीं बाहर बहना चाहती हूँ।'

तभी उधर से बच्चों का झुंड गुजरा, जिनके हाथों में पानी की बड़ी-बड़ी बोतलें थीं। अचानक एक बच्चे के हाथ से बोतल छूट गई, जिसका ढक्कन ढीला था। बोतल का पानी बोतल के साथ नदी तट से लुढकता हुआ जाकर फल्गू में गिर गया। बच्चे बोतल को उठाकर चलते बने और गौरैया नदी तट पर गड्ढे में कैद पानी की चंद बूँदों से अपनी प्यास बुझा कर फुर्र से उड़ गयी।

रानी
वर्ग-द्वादश

कुछ नया करें

थर्मोकोल की बादल-वर्षा

इस साल वर्षा न होने के कारण पानी की बहुत कमी हुई है। इसलिए दीदी ने हमलोगों को थर्मोकोल का बादल और वर्षा की बूँद के बारे में बताया है।

सामग्री–थर्मोकोल, मोटी वाली रस्सी, नीला रंग और चार्ट पेपर ।

विधि–थर्मोकोल पर स्केच से बादल का चित्र बनाएँगे, फिर उसे कैंची से काटकर उसे नीले रंग से रँग देंगे और रस्सी सूई से थर्मोकोल के आर-पार कर देंगे और ऊपर से सर्जीकल टेप से चिपका देंगे और रस्सी के निचले भाग में चार्ट पेपर को पानी की बूँद के साइज में उसे काट दें और इस प्रकार हो गया हमारा थर्मोकोल का बादल और वर्षा बन कर तैयार।

विवेक कुमार
वर्ग-सप्तम्

हमारा गया

मेरा नाम सिमरन कुमारी है। मैं कक्षा दसवीं में पढ़ती हूँ। मैं बिहार के गया के बारे में कुछ बताने जा रही हूँ। बिहार में हमारा गया अनोखा है। यहाँ कई देशों के लोग घूमने आते हैं। हमारे गया में गयासुर नामक एक राक्षस रहता था । यह सभी मनुष्यों पर घोर अत्याचार करता था। और उसे अपने आप पर बहुत घमंड था। लेकिन एक दिन उसका घमंड चूर हो गया। एक दिन गयासुर राक्षस के अत्याचारों से क्रुद्ध होकर भगवान विष्णु ने जन्म लेकर उसका घमंड चूर कर दिया। विष्णु-पद मंदिर में कई देशों से आए लोग यहाँ अपने पूर्वजों को मोक्ष दिलाते हैं। यहाँ तक कि खुद भगवान राम ने अपने पिता राजा दशरथ का पिंडदान और मोक्ष दिलाया था। इसलिए गया को 'ज्ञान एवं मोक्ष की धरती' कहते हैं। गया में विष्णु-पद मंदिर का निर्माण रानी अहिल्याबाई ने किया था। हमारे गया के निकट एक गाँव है जहाँ भगवान बुद्ध को पीपल-वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्त हुआ। इस स्थल को 'बोधगया' का नाम दिया गया। भगवान बुद्ध ने सभी देशों में भ्रमण किया; लेकिन उन्हें कहीं भी ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ । सिर्फ बिहार के गया-स्थल पर ही उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ। इसलिए इस धरती को 'ज्ञान एवं मोक्ष की धरती' कहते हैं।

सिमरन कुमारी
राजकीय कन्या उच्च विद्यालय, गया

घमंड और लत का नतीजा

एक समय की बात है । मिर्जापुर गाँव का जमींदार रामलखन सिंह रहन-सहन से अमीर तो दिखते थे परन्तु वास्तव में भी वे काफी अमीर के साथ-साथ घमंडी भी थे। वह जुए की लत का भी शिकार था। उसी गाँव में एक सज्जन व्यक्ति रहते थे, जिनका नाम दीनानाथ था। इन दिनों वे अपनी नौकरी की वजह से शहर में रह रहे थे । उनके बच्चों की गर्मी की छुट्टी हो चुकी थी। इस कारण वे गाँव पूरे परिवार सहित घूमने के विचार से आ रहे थे। ट्रेन पर उन्हें एक व्यक्ति काफी दीन-दशा में चाय बेचता दिखाई दिया। जब उन दोनों का सामना हुआ तो दीनानाथ चौंक गए, क्योंकि यह वही व्यक्ति था जो कुछ समय पहले एक रईस जमींदार हुआ करता था। दीनानाथ ने बड़े ही आश्चर्यजनक स्वर में पूछा, ''अरे ! आप..... ये सब कैसे हुआ। आपकी ऐसी स्थिति ?'' रामलखन ने अपनी स्थिति का कारण बताते हुए कहा कि मैं प्रतिदिन जुए में लाखों-लाख हारता रहा, जिसकी वजह से आज मेरे पास एक फूटी कौड़ी तक नहीं बची। आज मुझे समझ में आ चुका है कि जुआ नरक में दलदल के समान है, जिसमें एक बार पैर चला जाता है तो वह उसमें धँसता ही चला जाता है। जुआ इन्सान को आसमान से जमीन तक का रास्ता तय करा सकता है । हमें इस दलदल में कभी फँसना नहीं चाहिए।

सम्मी कुमारी

नन्हें कलाकार

दीपशिखा

रिंकी कुमारी

अंकित कुमार

ऋतुकेश कुमार भारती

सचिन कुमार

उत्तम कुमार

यही पहचान

मेरा शहर महान,
गया की यही पहचान ।
शान्ति का संदेश है देता,
दूर-दूर तक फैला इसका नाम ।
जिसने भी यहाँ का तिलकुट खाया,
तिल-तिलवा का मिठास है पाया।
देखो यहाँ कि खजुली निराली,
मुँह में घुले हो जाए खाली।
हलवाइयों के हाथों में है कितना जादू
अलग-अलग मिठाई देख हो जाते बेकाबू
दिन-रात मेहनत करते,
बनाते रंग-बिरंगी मिठाई ।
हमारा गया है तीर्थस्थल,
सभी करते इसकी बड़ाई।

अंकित कुमार
वर्ग-अष्टम

[No.G1/Mail/Registration/Renewal/PT-73/2015

कैमरे में किलकारी

गुलजार जी के संग बच्चे

किलकारी में इन्डिया वेस्ट ड्रामेबाज

बच्चों के संग महान कथक नृत्यक बिरजू जी महाराज

राष्ट्रीय बाल श्री चयन सम्मलित बच्चे

लघु कथा सम्मेलन में सम्मानित होते बच्चे

चलो घूमने चलें — बोध गया

बोधगया में बोधिवृक्ष, महाबोधि मंदिर और कई बौद्ध मंदिर स्थथित हैं। यहाँ हजारों बौद्ध भिक्षु इस पवित्र स्थल का दर्शन करने अलग-अलग देशों से आते हैं । बौद्ध धर्म के इस पवित्र तीर्थ स्थल के कुछ ही किलोमीटर पहले गया है, जहाँ भगवान विष्णु का विश्व प्रसिद्ध मंदिर है । तो चलो, इस बार विष्णु पद मंदिर घूमने गया चलें । पटना से दक्षिण दिशा में 124 किलोमीटर पर है गया । पटना से ट्रेन से और सड़क मार्ग से से भी गया पहुँच सकते हैं । तो चलो चलें गया ।

सुबह-सुबह किलकारी की बाल टीम ने गया के लिए यात्रा शुरू की है । आर्यभट्ट की कर्मस्थली तरेगना स्टेशन, जहानाबाद, बराबर की पहाड़ियों वाले स्टेशन बेला होते हुए । यहाँ से सीधे चलो, चलें-विष्णुपद मंदिर बाल भवन, पहुँच गये ।

ये देखो फल्गु नदी । नदी में पानी बहुत कम है लेकिन एक बात बताएँ आपको, इस नदी का पानी घटता-बढ़ता रहता है, और यदि इस नदी में पानी नहीं हो तो बालू खोदना शुरू करो नीचे से से पानी निकलना शुरू हो जायेगा । इस नदी के किनारे देखो ये विष्णुपद मंदिर । देख लो कितना खूबसूरत है । इसे इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होलकर ने 1787 ई० में निर्माण कराया था । इस मंदिर को बनाने के लिए राजस्थान के शिल्पकारों ने पत्थरों को तरासकर इसे बनाया है । समझ लो कि काले पत्थरों से बना यह मंदिर लगभग 220 वर्ष पुराना है । इस मंदिर की ऊँचाई देखो-इसकी ऊँचाई 30 मीटर है । इस मंदिर की विशेषता यह है कि यह अष्टकोणीय है । चलो पहले पूर्वी द्वार की ओर इसे देखो यह द्वारा गेनाईट पत्थर और लोहे के खंभों से बना है । इस विशाल मंडप में श्रद्धालु पूजा-पाठ कर रहे हैं । यहाँ पर शादी-ब्याह के कार्यक्रम भी होते हैं । मंदिर के गर्भ गृह के बीच में है पत्थर पर भगवान विष्णु का 40 सेन्टीमीटर लम्बा चरण चिह्न । पता है इसे 'धर्मशिला' के नाम से भी जाना जाता है । इसके चारों ओर देखो चाँदी की पट्टियाँ लगी हैं । इस मंदिर के मुख्य पुजारी हैं-'गयाबाल पंडा' । कहा जाता है कि यहीं पर भगवान विष्णु ने गयासुर नाम के राक्षस पर विजय प्राप्त कर उसकी छाती पर अपना पैर रखकर उसे दबा दिया तब से यहाँ यह चिह्न बना है । यह कहा जाता है कि भगवान श्रीराम अपनी पत्नी सीता को लेकर यहाँ विष्णुपद मंदिर का दर्शन करने तथा पिण्ड दान करने आये थे ।

लोग अपने पूर्वजों को जीवन-मरण के बंधन से मुक्त करने के लिए यहाँ पिण्डदान करने आते हैं । मंदिर के ऊपर देखो सोने का कलश लगा है । इसकी चमक तो दूर से ही आकर्षित करती है। इस मंदिर में स्थित भगवान विष्णु के चरण के दर्शन रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, शंकरदेव और चैतन्यमहाप्रभु जैसे सन्त कर चुके हैं ।

वृहस्पतिवार के दिन यहाँ बहुत भीड़ होती है । साल में एकबार पितृपक्ष मेला लगती है इस मेले में जो भी तीर्थयात्री आते हैं वे इस मंदिर में आकर अपने परिवार की मंगल कामना करते हैं ।

इस चरण की विधिवत् पूजा शृंगार गयावाल पंडा प्रतिदिन तुलसी के पत्तों तथा अन्य पूजन सामग्री से करते हैं । चलो जब हमलोग यहाँ आये हैं तो इस पवित्र भूमि पर भगवान विष्णु के इस चरण चिन्ह का दर्शन और पूजन कर लें । अब चलो भई! शाम हो गई है । बाल किलकारी टीम वापस पटना आ गए ।

भित्ति चित्रकला कार्यशाला में बच्चे।

भेजें रचनाएँ

दोस्तो !

'बाल किलकारी अखबार' के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य-हम बच्चों की आवाज को बुलंद करना है और सृजनात्मक प्रतिभा को निखारना है। आप अपनी लिखी हुई कहानी, कविता, लघुकथा, चुटकुले, पहेली, चित्र, आपबीती, खेल, अखबार पर प्रतिक्रिया या रचनाएँ भेज सकते हैं। रचना के साथ अपना नाम, वर्ग, विद्यालय का पता, सम्पर्क नम्बर अवश्य ही भेजें। चुनी गई रचनाएँ अगले अंक में प्रकाशित की जाएँगी।

-बाल सम्पादक मंडल

बबलू बबली के चुटकुले

- बबली (बबलू से)-तुम धूप में क्यों लेटे हो ?
  बबलू-मैं पसीना सूखा रहा हूँ ।
- बबलू- बबली, रामनवमी क्यों मनाते हैं?
  बबली-सिंपल है, इस दिन भगवान राम आठवीं कक्षा पास कर नवमी में गये थे ।
- बबलू (चाय वाले से)-पैसे से तो चाय पिलाते हैं, आप फ्री में पिलाइए तो जानें।
  चाय वाला-भरे कप चाय तो सभी पीते हैं। तुम खाली कप चाय पीयो तो जानें।
- एक व्यक्ति अपने दोस्त से मिलने उसके घर गया। डोरवेल बजाई तो एक बच्चा बाहर आया।
  आदमी-पापा घर पर हैं ?
  बच्चा-जी वे बाजार गये हैं ।
  आदमी-चलो, बड़े भाई को बुला दो ।
  बच्चा-वे क्रिकेट खेलने गये हैं।
  आदमी-अच्छा, अपनी मम्मी को बुला दो।
  बच्चा-जी, वह किसी पार्टी में गई है।
  आदमी-तो, तुम घर पर क्यों हो ?
  बच्चा-जी, यह मेरा घर नहीं है। मैं तो अपने दोस्त के घर आया हूँ।
- बबली-बबलू, तुम कितने साल से जलेबी बना रहे हो ?
  बबलू-30 साल से ।
  बबली-बड़े शर्म की बात है 30 साल में एक भी जलेबी सीधी नहीं बनी।

इस अंक के प्रतिभागी-
अंकित, सचिन, पुरुषोत्तम, ऋतुकेश, रौशन, आयुष, मनीष, संतोष, प्रतिमा, संजना, रिंकी, दिप्ती, तृषा, पूजा, सपना, चिन्ता, रंगोली, सुभांगी, काजल अमीषा, दीपशिखा, कल्पना, प्रियंका, विभा, सम्मी, सुषमा, (बाल भवन, गया से)
बाल सम्पादक-अतुल, रानी, प्रवीण, विवेक, अभिनंदन, सम्राट, सरिता, तुलसी, प्रियंतरा, घुँघरू, मुनटुन।
संयोजक- सुधीर कुमार
कार्यकारी सम्पादक-राजीव रंजन श्रीवास्तव, विशेष सहयोग-वीरेन्द्र कु. भारद्वाज, संगीता दत्ता
संपादक-ज्योति परिहार, निदेशक, बिहार बाल भवन, किलकारी, पटना
कार्यालय- बिहार बाल भवन सैदपुर, किलकारी, पटना-800004 (बिहार)

इस अंक के जवाब बूझो-बुझौवल

1. हाथ, 2. बाघ, छाता, आदमी, केकड़ा
3. फूलगोभी, 4. आईना, 5. बंदूक गोली,
6.मकड़ी, 7. लालटेन, 8. साबुन, 9. कुआँ

माथापच्ची : 4 रुपये

दूरभाष : 0612-3224919, 2661295 ई-मेल : info@kilkaribihar.org ब्लॉग : kilkaribihar.blogspost.in फेसबुक : www.facebook.com/kilkaribihar यूट्यूब : www.youtube.com/kilkaribihar वेबसाइट: www.kilkaribihar.org